कुल पृष्ठ संख्या-32 (कवर पेज सहित) क्रम संख्या..............................

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures) | | | | | | | |

(In Words) ....

....

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में ....

....

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ☐ अंग्रेजी ☑

विषय .... Hindi ....

परीक्षा का दिन ....

दिनांक ....

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांको की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंको का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर .... संकेतांक | | | | |

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तक के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग मे लिया गया है। 163 / 2018

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशषां पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   - (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   - (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये।
   - (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   - (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   - (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित हैं। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड – क

1. (अ) समाज के कल्याण के लिए मनुष्य को सर्वप्रथम पारिवारिक शांति, सद्भाव व प्रेम आदि गुणों को ग्रहण करना अति आवश्यक है ताकि व सुकून से सामाजिक चिंतन कर सके।

(ब) किसी देश को प्रशंसनीय बनाने में निम्न तत्वों का योगदान रहता है:—

(i) देशवासियों में देश के प्रति गर्व की भावना,
(ii) मातृ-भूमि पर स्वाभिमान,
(iii) सह-अस्तित्व व बंधुत्व की भावना।

2. (अ) किसी भी कार्य को प्रारंभ करने से पूर्व हमें उसकी प्रक्रिया व उसके आनेवाले परिणाम के बारे में विचार कर लेना चाहिए

(ब) देश के सुधार के लिए निम्न उपाय करने चाहिए —
(i) जाति-पाँति के भेदभाव की प्रथा का उन्मूलन,
(ii) देशवासियों में परस्पर प्रेम भावना,
(iii) नैतिक नीतियों का पालन,
(iv) देश को हानि पहुचाने वाली क्रियाओं का त्यगान।

इस प्रकार देश आगे बढ़ेगा

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड - ख

3\. (अ) खड़ी बोली हिंदी का विस्तार पश्चिमी हिंदी से हुआ है। अतः पश्चिमी हिंदी की शब्दावलियों को कुछ रूपांतरित करके खड़ी बोली हिंदी ने अपने शब्द भंडार का विकास किया है।

(ब) व्याकरण →

व्याकरण वह शास्त्र है जो किसी भी भाषा के शुद्ध रूप को लिखने व बोलने के नियमों का ज्ञान कराता है।

4\. (अ) चीन 'साम्राज्य विस्तार नीति' पर कार्य करता है।

चीन — व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग, कर्ता कारक, 'करता है' क्रिया का कर्ता

(ब) रजनी समय से पहले आ गई।

पहले — कालवाचक क्रियाविशेषण, 'आ गई' क्रिया की विशेषता बताता है।

5\. 'चमेली का पुष्प श्वेत वर्ण का सुगंधित पुष्प है।'

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उपर्युक्त वाक्य में अभिधा शब्द शक्ति है।

परिभाषा :-
जिस शब्द शक्ति के माध्यम से प्रथम बार में ही वाक्य का मुख्यार्थ स्पष्ट हो जाए, अभिधा शब्द शक्ति कहलाती है।

6. "अजौं ---- ---- संग॥"

उपर्युक्त दोहे में श्लेष अलंकार है।

कारण -
वह काव्य पंक्ति जिसमें एक शब्द भिन्न-भिन्न अर्थों का बोध कराता है वहाँ श्लेष अलंकार होता है।

→ उपर्युक्त वाक्य में 'तरयौना' शब्द के दो अर्थ है - एक है 'कान का आभूषण' व एक 'भवसागर से पार ना हो पाने वाले लोग'

→ इसी प्रकार 'बेसरि' के भी दो अर्थ हैं - एक 'नाक का आभूषण' और एक 'बुरे लोग'

7. (अ) Schedule - अनुसूची

(ब) Project - परियोजना

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

8. अर्द्धशासकीय पत्र का प्रारूप

राजस्थान सरकार
शिक्षा विभाग

रविकुमार — सचिवालय
शासन सचिव — जयपुर

दिनांक - 8-03-2018
अ.शा.प.क्र.-144(6)/2018

प्रिय संस्था प्रधान
उपर्युक्त विषय पर आपसे चर्चा करना चाहूँगा। राज्य की बिगड़ी हुई शिक्षा व्यवस्था एक अत्यंत चिंता का विषय बनी हुई है। राज्य में उचित व 'गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा' का अभाव देखने को मिलता है। इस संदर्भ में हमारे पास अनेकों शिकायतें आई हैं। आपसे पत्राचार का उद्देश्य 'गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा' को सुनिश्चित करना ही है।
आशा है कि आप सभी के सहयोग से यह उद्देश्य अल्पावधि में पूर्ण हो जाएगा।
सधन्यवाद

भवदीय
रविकुमार

प्रतिष्ठा में -
समस्त संस्था प्रधान

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

9. निबंध - नदी जल स्वच्छता अभियान

* रूपरेखा -
1. प्रस्तावना
2. अभियान का तात्पर्य
3. विस्तार
4. अभियान के परिणाम
5. उपसंहार

प्रस्तावना :-
नदीजल स्वच्छता अभियान
यह अभियान एक पहल है जो भारत की नदियों के विकास व उन्हें प्रदूषण मुक्त करने के लिए चलाया जा रहा है।

**"रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून
पानी गए न उबरे मोती मानस चून"**

उपर्युक्त पंक्तियाँ पानी के महत्व का आभास कराती हैं। इनका सार यह है कि जल के बिना जीवन का कोई मोल नहीं है।

सरकार द्वारा चलाया गया यह अभियान वर्तमान स्थितियों में परिवर्तन लाने का पक्षधर है। भारत की बड़ी नदियाँ जैसे - गंगा, यमुना, गोदावरी आदि प्राचीन काल से पवित्र ~~रहे~~ रही हैं परंतु बढ़ती मानवीय जनसंख्या व क्रियाओं ने इन्हें प्रदूषित करने में कतई कमी नहीं छोड़ी।

आइए, जानते हैं अभियान के बारे में।

BSER-161/2017

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

अभियान का तात्पर्य :-

नदी जल स्वच्छता अभियान का तात्पर्य नदियों में ~~क~~ बढ़ते प्रदूषण व गंदगी का उन्मूलन करना है।

नदियों की स्वच्छता की आवश्यकता बहुत अधिक है। गंगा जो भारत की सबसे पवित्र नदी है तथा जिसमें लोग अपने पाप धोने जाते हैं वह लोगों के पाप धो-धोकर इतनी मैली हो गई है कि उसकी पाप धोने की क्षमता भी शायद खत्म होने वाली

'जल प्रदूषण स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।'

इस कथन से हम सभी परिचित है जहाँ-तहाँ यह ~~कथक~~ कथन हमें लिखा मिल जाता है- पुस्तकों में, रेलवे स्टेशन पर। परंतु इसे चरितार्थ करने वालों का यहाँ अभाव है।

इसे सभी को ग्राह्य बनाने के लिए सरकार का यह अभियान चलाया गया है।

विस्तार :-

7 जुलाई 2016 को भारत की जल संसाधन विकास मंत्री - उमा भारती ने गंगा घाट पर एक साथ **300 नमामि गंगे** प्रोजेक्ट लॉन्च करने की

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

घोषणा की
यह नदी जल स्वच्छता अभियान का ही एक रूप है। इसके अंतर्गत गंगा घाटों की सफाई व जल में अतिरिक्त प्रदूषण को रोकने की मुहिम शामिल है।

→ अभी यह अभियान व्यापक स्तर पर नहीं विकसित हो पाया है परंतु भविष्य में स्वच्छ भारत अभियान की भाँति यह भी उत्कृष्ट परिणाम प्रदान करेगा।

अभियान के परिणाम :- जैसा कि हम ऊपर बात कर चुके हैं कि अभी यह अभियान अधिक विस्तृत नहीं हुआ है परंतु फिर भी इसने अपेक्षित परिणाम देना प्रारंभ कर दिया है।

→ इस अभियान के चलते गंगा में डुबकी लगाने की इच्छा रखने वाले श्रद्धालु अब उसे गंदा ना करने की भी पूरी कोशिश करते हैं।

→ सरकार के योगदान ने जनता को जागरूक बनाया है तथा निम्न उक्ति को चरितार्थ किया है-

जल की स्वच्छता सबका मान
इसलिए चलाया नदी जल
स्वच्छता अभियान

भविष्य में भी यह अभियान दूरगामी परिणाम देगा।

RSEB 161/2017

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उपसंहार :- संपूर्ण निबंध का सार इसी बात में निहित है कि -

सरकार के साथ-साथ जन-सामान्य को भी अपनी चेतना को जगाना होगा तभी नदियों में हमें स्वच्छ व स्वस्थ जल मिलेगा।-

एक महान ~~दा~~ दार्शनिक **बॉब मैरी** ने कहा है-

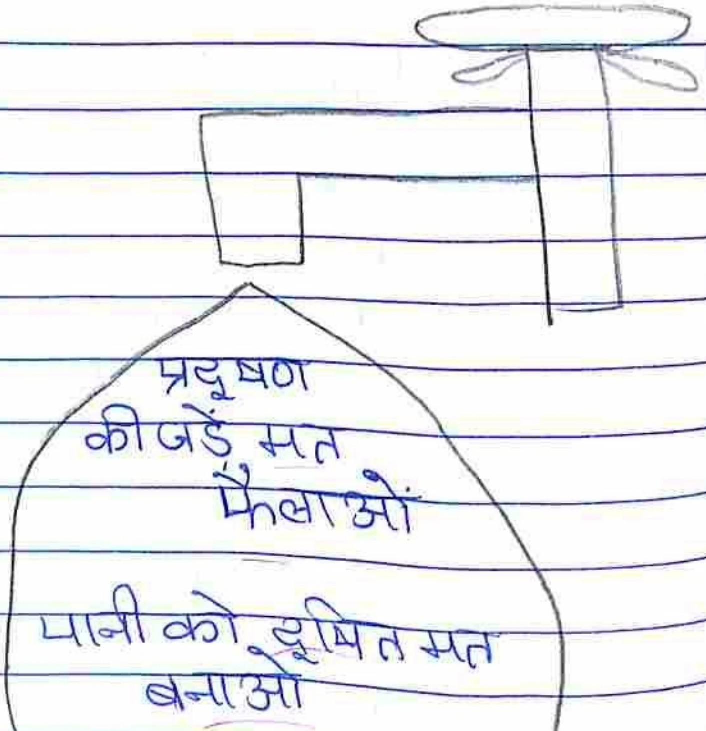

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड - ग

10\. "कदली _ _ _ _ _ _ _ _ _ सीस ।।"

संदर्भ :-
उपर्युक्त पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक 'सृजन' में संकलित रहीम द्वारा रचित 'नीति के दोहे' नामक पद्य से ली गई हैं।

प्रसंग :-
उपर्युक्त पंक्तियों में कवि संगति के असर व समाज में नीतिपरायणता से प्राप्त मान के संदर्भ में संदेश दे रहे हैं

व्याख्या :-
उपर्युक्त दोहे में कवि रहीम कहते हैं कि स्वाति नक्षत्र में गिरी बूँद अपनी संगति से भिन्न-भिन्न रूप प्राप्त करती है। यदि वह केले के वृक्ष पर गिरती है तो फल का रूप धरती है। यदि सीप में गिरती है तो मोती बन जाती है तथा साँप के मुख में गिरने पर विष का रूप धारण करती है।

इसी प्रकार हम जैसी संगति में रहते हैं हमारा स्वभाव उसी के अनुसार ढल जाता है।

अपनी बात में कवि आगे कहते हैं कि सी समुद्र मंथन के समय निकले विष को ससम्मान शिवजी ने ग्रहण किया तथा संसार के स्वामी कहलाएँ परंतु राहु ने धोखे से अमृतपान किया फिर भी वे विष्णु के चक्र से मारे गए। इसी प्रकार कोई भी व्यक्ति धोखे व छल से अर्जित धन से सम्मान नहीं पा सकता

विशेष :-
(i) दोहा छंद का प्रयोग हुआ है।
(ii) उदाहरणों के माध्यम से नीति का पाठ पढ़ाया है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

11. "मुझे तो ----- ----- . श्मशान में।"

संदर्भ :-

उपर्युक्त गद्य अवतरण हमारी पाठ्य पुस्तक 'सृजन' में संकलित "मजदूरी व प्रेम" नामक निबंध से लिया गया है जिसके लेखक सरदार पूर्ण सिंह है।

प्रसंग :-

उपर्युक्त गद्य में लेखक ने हस्तकला में छिपे प्रेम व कला-कुशलता को दर्शाया है। लेखक बताता है कि यांत्रिक व हस्त निर्मित वस्तुओं में कितना व क्या अंतर होता है।

व्याख्या :-

उपर्युक्त गद्य में लेखक बताता है कि मनुष्य द्वारा अपने हाथ से निर्मित वस्तुओं में उसे पवित्र आत्मा की प्रतीती होती है। एक चित्रकार राफेल का उदाहरण देकर उन्होंने बताया है कि वे अपने चित्र हाथ से बनाते थे। अपने मनोभावों को उसमें व्यक्त करते थे इसी कारण इतने समय बाद भी उनके चित्रों में उनके मन के सारे भाव स्पष्ट दिखाई देते हैं। हाथ से बने चित्रों में सिर्फ कला का ही नहीं बल्कि चित्रकार की आत्मिक अनुभूति के भी दर्शन हो जाते हैं।

लेखक कहता है यांत्रिक चित्र निर्जीव प्रतीत होते हैं। यंत्र व हाथ से बने चित्र क्रमशः निर्जन श्मशान भूमि व जीवित व्यक्तियों की चहल-पहल से भरी बस्तियों को प्रकट करते हैं।

विशेष :-

(I) लेखक ने अपने मनोभावों का सुंदर चित्रण किया
(II) चित्रों के माध्यम से मानवीय श्रम की महत्ता बताई है
(III) श्मशान व बस्ती के द्वारा यंत्र व हस्त कला में भेद किया है।

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

12. 'बाजार में एक जादू है'। इस कथन को "बाजार-दर्शन" नामक निबंध में लेखक जैनेन्द्र कुमार ने इस प्रकार स्पष्ट किया है–

(1) खाली मन :– खाली मन का तात्पर्य है अपनी आवश्यकताओं का ज्ञान न होना। लेखक के अनुसार यदि खाली मन से बाजार जाया जाए तो बाजार का जादू अर्थात आकर्षण व्यक्ति को अपने मोहपाश में जकड़ लेता है।

(2) होड़ की भावना :– यदि हम किसी के पास स्वयं से अच्छी वस्तु देख लेते हैं तो हृदय में एक टीस उत्पन्न होती है तथा उससे होड़ की भावना जाग्रत होती है। जब हम बाजार जाते हैं तो हमारी आँखों के माध्यम से बाजार का आकर्षण हमें प्रभावित करता है।

(3) परचेज पावर :– इसका तात्पर्य है पैसे की 'क्रय-शक्ति' अर्थात् खरीदारी करने की क्षमता। बाजार में जाकर हमारा मन तब तक शांत नहीं होता जब तक पूरी जेब खाली ना हो जाए। यह बाजार आकर्षण का प्रभाव है।

→ इस प्रकार यह स्पष्ट है कि बाजार में एक जादू है।

---

13. 'आत्म परिचय' कविता अपनी ~~है~~ अस्मिता का बोध कराती है इसे निम्न प्रकार समझा जा सकता है–

(1) कवि बच्चन जी का जीवन सार :– कविता की

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्रथम पंक्तियों में ही कवि कहता है कि वह इस संसार का भार अपने ऊपर उठाकर चलता है फिर भी संसार को प्रसन्नता का ही संदेश देता है। अतः हरिवंशराय बच्चन जी के जीवन का सार संसार के प्रति प्रेम भावना व अपना दीवानापन है।

(2) अपना स्वयं का कल्पना संसार :- कवि कहता है कि उसका इस जग से कोई नाता नहीं है वह तो अपने कल्पना के संसार में ही जीता है। इसी से ~~कवि~~ कवि प्रत्येक को अपनी पहचान का अहसास कराता है।

(3) मस्त रहने का संदेश :- कवि अपनी कविता के माध्यम से अपने पाठकों व पूरे संसार को मस्त व उन्माद पूर्ण जीवन जीने का संदेश देता है।

→ इस प्रकार 'आत्म-परिचय' कविता में कवि सभी पाठकों को स्वयं की भाँति अपनी अस्मिता का अहसास कराता है।

---

14. 'भ्रमरगीत' पाठ के आधार पर यह कहा जा सकता है कि सूरदास के पदों में प्रेमभक्ति की धारा प्रवाहित हुई है —

(i) गोपियों के माध्यम से कवि श्रीकृष्ण के प्रति अपना प्रेम व्यक्त करते हैं।

(ii) सूरदास ने श्रीकृष्ण की ओर से आए योग संदेश को नकारते हुए उनके इंतजार में जीवन व्यतीत करने को प्रमुखता दी है।

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

15. तुलसीदासजी ने - धैर्य, साहस, शील, सुसंगति, नी निर्भीकता, सत्य को बुरे समय का साथी बताया है।
उन्होंने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि ये मनुष्य की आत्मा के गुण है तथा बुरा समय आने पर भले ही शरीर व संगी-साथी-परिवार-मित्र हमारा साथ छोड़ दे परंतु आत्मा सदैव साथ रहती है।

16. 'शासन की दृष्टि में समानता की बात महत्वपूर्ण है।'
डॉ. भीमराव अंबेडकरजी ऐसा इसलिए कहते हैं क्योंकि यदि राष्ट्र के नागरिकों में समानता नहीं होगी तो वे शासन की गतिविधियों में समुचित रूप से भाग नहीं ले पाएँगे।
प्रजातांत्रिक शासन में तो जनता को ही सर्वोपरि माना गया है परंतु यदि धनी-निर्धन, ऊँचा-नीचा के आधार पर भेदभाव होगा तो शासन की नींव खोखली हो जाएगी।

17. पिता के द्वारा उत्कोच स्वीकार करने पर 'ममता' के हृदय को गहरा घात लगा वह कभी भी अपने ब्राह्मण पिता के बारे में ऐसी कल्पना भी नहीं कर सकती थी
ममता के हृदय में अपने पिता के लिए अपार सम्मान व प्रेम था परंतु फिर भी धर्म के विरुद्ध जाकर उत्कोच की राशि को स्वीकारने से उसने मना कर दिया तथा पिता को भी अपनी गलती का अहसास दिलाया

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

18. साहित्यकार ~~कन्हैया~~ कन्हैया लाल मिश्र 'प्रभाकर' का साहित्यिक परिचय –

* जन्म – 1906
* मृत्यु – — —.
* जन्मस्थान – सहारनपुर (उ.प्र.) देवबंद ग्राम में
* पिता – पं. रमादत्त मिश्र पुरोहित।

→ प्रभाकर जी एक प्रसिद्ध पत्रकार रहे हैं।

→ ये आत्म चिंतन पर आधारित रचनाओं को प्रमुखता देते रहे हैं।

→ इनकी भाषा – सरल, सहज, तत्सम प्रधान रही है

→ मिश्र जी की शैली – भावात्मक, वर्णनात्मक, गवेषणात्मक है।

→ प्रमुख गद्य विधाएँ – कहानी संग्रह, संस्मरण, रिपोर्ताज ~~आदि~~ आदि।

* रचनाएँ –

1. निबंध संग्रह – जिए तो ऐसे जिए, माटी हो गई सोना, बाजे पायलिया के घुंघरू, महके आँगन
2. कहानी-संग्रह – आकाश के तारे, धरती के फूल
3. रिपोर्ताज – ~~क्षण~~ क्षण बोले कण मुस्काए
4. संस्मरण – भूले बिसरे चेहरे
5. संपादन – ज्ञानोदय, नया जीवन, विकास

---

19. उक्त कथन के आधार पर शमशेर बहादुर सिंह द्वारा लिए गए उपमान निम्न प्रकार हैं –

1. राख से लीपा हुआ चौका
(अभी गीला पड़ा है।)

परीक्षार्थी उत्तर

2. केसर से धुली हैं काली सिल
लाल खड़िया चॉक मल दी हो किसी ने
3. जल में हिलता प्रतिबिम्ब
4.

20. उक्त कथन के आधार पर बसन्त की चारित्रिक विशेषताएँ –
1. सफाई के प्रति सनकी न होना
2. स्वास्थ्य के प्रति सजग होना।

खण्ड - घ

21. 'मनुष्य और उसका काम'
इस विषय पर गाँधीजी के विचार निम्न प्रकार थे –
(i) मनुष्य को स्वावलंबी होना ~~होना~~ चाहिए
(ii) अपना कार्य स्वयं करने की आदत अच्छी है।
(iii) स्वयं के द्वारा किए गए कार्य में स्वयं के अनुसार त्रुटियाँ नहीं होती।

22. 'कल; ------ --- काम'
लड़की के इस कथन का बालक लहना सिंह पर मिश्रित प्रभाव पड़ा। उसे दुःख व क्रोध दोनों की अनुभूति हुई तथा वह अचेत-सा हो गया।
उसकी इस मनोदशा का कारण यह था उसके

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
		ह्रदय में लडकी के लिए प्रेम के अंकुर फूट गए थे तथा वह उसे चाहने लगा था।
	23.	'गौरा' रेखाचित्र के अनुसार ग्वाले द्वारा गौरा को गुड़ में लपेटकर सुई खिलाने की बात को जानकर महादेवी वर्मा को आश्चर्य व कष्ट; दोनों की अनुभूति हुई। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि - [1] गौरा की पीड़ा के बारे में जानकर उसे कष्ट हुआ। [2] स्वयं एक गौ-पालक होकर गाय को मारने का प्रयास करने वाले ग्वाले पर उसे आश्चर्य हुआ
	24.	देवनारायण जी, रामदेवजी व संत जम्भेश्वर को "राजस्थान" का गौरव निम्न कारणों से कहा जाता है - [1] देवनारायण जी - (i) देवनारायण जी द्वारा तत्कालीन अत्याचारियों का संहार किया गया (ii) देवनारायण जी ने आयुर्वैदिक ज्ञान को नई दिशा दी (iii) औषधि के रूप में गोबर व नीम का महत्व बताया। [2] रामदेव जी - (i) रामदेवजी ने अपने चमत्कार से नेतलदे, सारथिये व सुगना का भला किया।

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(II) इन्होंने दलितों से संपर्क बढ़ाया तथा उनका कल्याण करने की दिशा में सार्थक प्रयास किए।
(III) जनमा जागरण नामक आंदोलन चलाया

[3] संत जम्भेश्वर! –
(I) इन्होंने धर्म सुधार व प्रकृति से सहजीवन के क्षेत्र में सार्थक कार्य किए।
(II) इन्होंने 29 नैतिक नियम बनाए जिन्हें मानने वाले 'बिश्नोई' कहलाए।
(III) इनके अनुयायियों ने खेजड़ी वृक्षों को बचाने के लिए बलिदान दिया।

| खण्ड - 5 |

25. टीवी समाचारों की विशेषताएँ –

1. इसके समाचार दृश्य - श्रव्य होते है।
2. गतिशील व प्रभावशाली होते है।
3. गत्यात्मकता व सजीवता होती है।
4. साक्षर व निरक्षर दोनो वर्गों से संबंधित होते है।

26. संपादक के नाम पत्र लिखते समय निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए –
[1] पत्राचार का विषय किसी पृष्ठभूमि पर आधारित है।
[2] पत्र में प्रयुक्त भाषा उचित व प्रकाशन योग्य

BSER-161/2017

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

3. व्यक्तिगत आक्षेपों का प्रयोग नहो
4. आलोचनाएँ विषयपरक व तथ्यपरक हों।

27. किसी साक्षात्कार को लिखने के बाद व प्रकाशन से पूर्व ~~कौनसे~~ निम्न कार्य करने चाहिए-

1. लिखे गए साक्षात्कार की जाँच की जाए कि कहीं कोई प्रश्न छूट तो नहीं गया है।
2. प्रकाशन से पूर्व भाषा व शैली की जाँच कर लेनी चाहिए
3. किसी ऐसे तथ्य का प्रकाशन नहीं करना चाहिए जो पाठक के हृदय को चोट पहुँचाए

28. यदि मुझे पत्रकार बनना पड़े तो मैं फिल्मी पत्रकारिता करना चाहूँगी। इसके निम्न कारण है-

1. फिल्मी पत्रकारिता का वर्ण्य विषय बहुत ही रुचिकर होता है।
2. यह फिल्मों के माध्यम से प्रसारित जनसंदेश को व्यापक रूप में प्रस्तुत करती है।
3. फिल्मी दुनिया से जुड़े व्यक्तियों को तथा उसके कृतित्व व व्यक्तित्व को जानने के सुअवसर प्रदान करती है।

उदा.- हाल ही फिल्म पद्मावत के विरोध व कलाकारों के साक्षात्कार फिल्मी

शिक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

पत्रकारिता का उदाहरण है।

---

29. यायावर मोहन राकेश का प्रसिद्ध यात्रा वृत्तांत है- 'आखिरी चट्टान तक'

मोहन राकेश यात्रा की विशेषताएँ निम्न प्रकार से बताते हैं-

(i) यात्रा नैसर्गिक जीवन की अनुभूति कराती है।
(ii) यात्रा व्यक्ति में अनुभव का विस्तार करती है।
(iii) व्यक्ति यात्रा के माध्यम से प्रकृति, संस्कृति व धर्म आदि के बारे में ~~जान~~ जानकारी प्राप्त करता है।
(iv) यात्रा वह अनुभूति है जो मनुष्य को जीवन में दिव्यता, आलौकिकता व आध्यात्मिकता के दर्शन कराती है।

समाप्त